DEPARTMENT OF SANSKRIT

Dr. K. I. Treesa
Asst. Professor In Sanskrit

SUBHASHITAS

Subhashitas are known for their inherent moral and ethical advice, instructions in worldly wisdom and guidance in making righteous deeds. Subhashitas create an appeal as the inherent message is conveyed through poems which quote practical examples which are often rhythmic in nature. Some authors even relate Subhashitas to sugar coated bitter medicines considering their worthiness.

The subhashita deals with various subjects and includes topics of day to day experiences that every one can easily relate to. A subhashita is always eloquent in form, structured in a poetical form, complete in itself and concisely depicts a single emotion, idea, dharma, truth or situation.

He is the reputed author of three Satakas or centuries of couplets : 1. Sringara Sataka, a purely amatory poem ; 2. Niti Sataka, on polity and ethics ; 3. Vairagya Sataka, on religious austerity. Besides these, tradition assigns to him a grammar called Vakyapadiya, and a poem called Bhattikavya. But beyond tradition there is no evidence whatever as to the authorship of these Satakas.

The theory already referred to, that Bhartrihari was a prince who quitted the world in disgust, is founded upon the somewhat vague allusions in the second Sloka of the Niti Sataka.

This has been supposed to refer to the discovery of a domestic intrigue in his own household, which so shook Bhartrihari's faith in worldly matters, that he decided to abdicate his royal position, and to retire into the forest as an ascetic.

Sringara Sataka

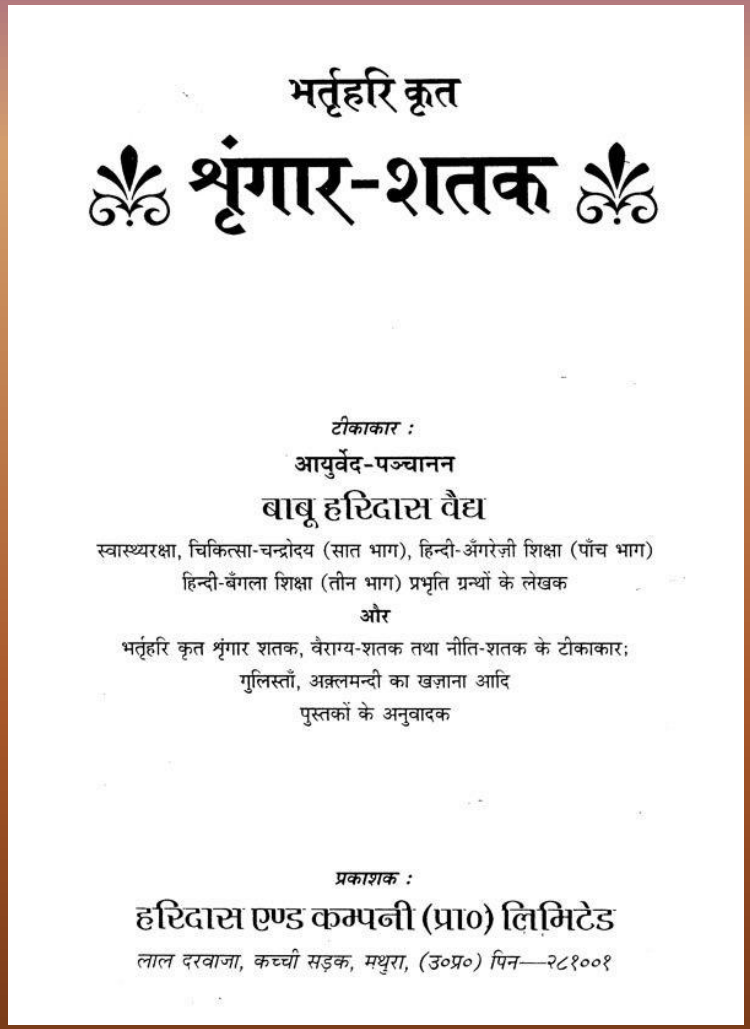

भर्तृहरि कृत

शृंगार-शतक

टीकाकार :

आयुर्वेद-पञ्चानन

बाबू हरिदास वैद्य

स्वास्थ्यरक्षा, चिकित्सा-चन्द्रोदय (सात भाग), हिन्दी-अँगरेज़ी शिक्षा (पाँच भाग)
हिन्दी-बँगला शिक्षा (तीन भाग) प्रभृति ग्रन्थों के लेखक

और

भर्तृहरि कृत शृंगार शतक, वैराग्य-शतक तथा नीति-शतक के टीकाकार;
गुलिस्ताँ, अक़्लमन्दी का खज़ाना आदि
पुस्तकों के अनुवादक

प्रकाशक :

हरिदास एण्ड कम्पनी (प्रा०) लिमिटेड

लाल दरवाजा, कच्ची सड़क, मथुरा, (उ०प्र०) पिन—२८१००१

Vairagya Sataka

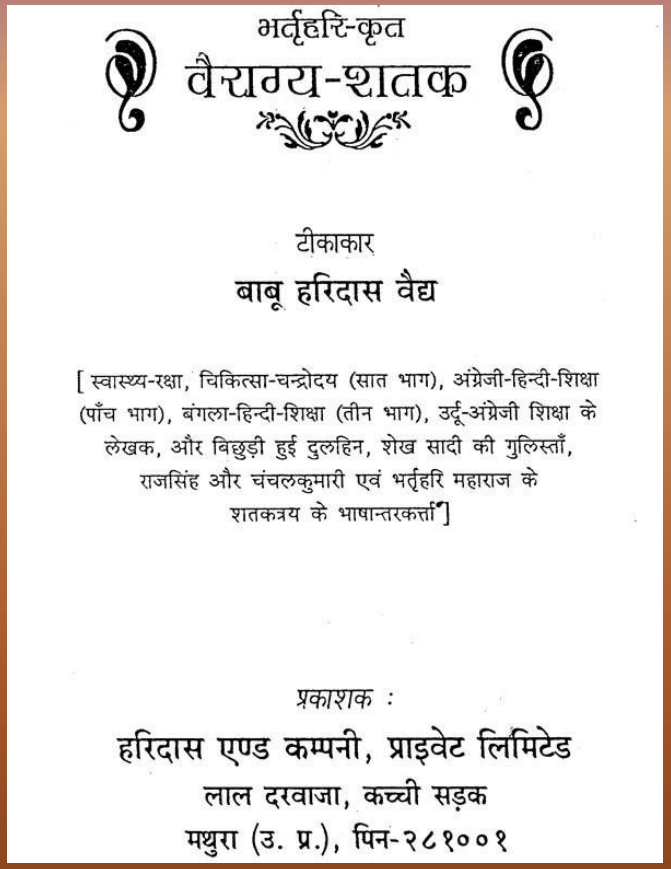

भर्तृहरि-कृत

वैराग्य-शतक

टीकाकार

बाबू हरिदास वैद्य

[स्वास्थ्य-रक्षा, चिकित्सा-चन्द्रोदय (सात भाग), अंग्रेजी-हिन्दी-शिक्षा (पाँच भाग), बंगला-हिन्दी-शिक्षा (तीन भाग), उर्दू-अंग्रेजी शिक्षा के लेखक, और बिछुड़ी हुई दुलहिन, शेख सादी की गुलिस्ताँ, राजसिंह और चंचलकुमारी एवं भर्तृहरि महाराज के शतकत्रय के भाषान्तरकर्त्ता]

प्रकाशक :

हरिदास एण्ड कम्पनी, प्राइवेट लिमिटेड

लाल दरवाजा, कच्ची सड़क

मथुरा (उ. प्र.), पिन-२८१००१

Niti Sataka

शिक्षा—विषय विष हैं। इनका त्याग ही सुख की जड़ है। जो विषयी हैं, उन्हें कहीं सुख नहीं है। अत: काम को जीतो। जिसने काम को जीत लिया, उसने सब को जीत लिया।

छप्पय

भीख-अन्न इक बार लौन बिन खाय रहत हूँ।
फटी गूदरी ओढ़ वृक्ष की छाँह गहत हूँ।।
घास पात कछु डारि भूमि पर नित प्रति सोवत।
राख्यौ तन परिवार भार यह ताको ढोवत।।
इहि भाँति रहत चाहत न कछु, तऊ विषय बाधा करत।
हरि ! हाय तेरी सरन, आय पर्‌यो इनसे डरत।।१९।।

19. A man may go abegging for his food and get a tasteless meal once a day. He may have earth only for his bed and his own body for his servant. His clothes may consist of only an old and dirty sheet with hundreds of rags hanging from it. But what what a pity that the objects of pleasure do not desert even such a man.

स्तनौ मांसग्रन्थी कनककलशावित्युपमितौ
मुखं श्लेष्मागारं तदपि च शशांकेन तुलितम्
स्रवन्मूत्रब्क्लिन्नं करिवरकरस्पर्द्धि जघन—
महो निद्यं रूपं कविजनविशेषैर्गुरुकृतम्।। २०।।

स्त्रियों के स्तन मांस के लोंदे हैं, पर कवियों ने उन्हें सोने के कलशों की उपमा दी है। स्त्रियों का मुँह कफ का घर है, पर कवि उसे चन्द्रमा के समान बताते हैं और उनकी जाँघों को जिनमें पेशाब प्रभृति बहते रहते हैं, श्रेष्ठ हाथी

Subhashita Sahasri

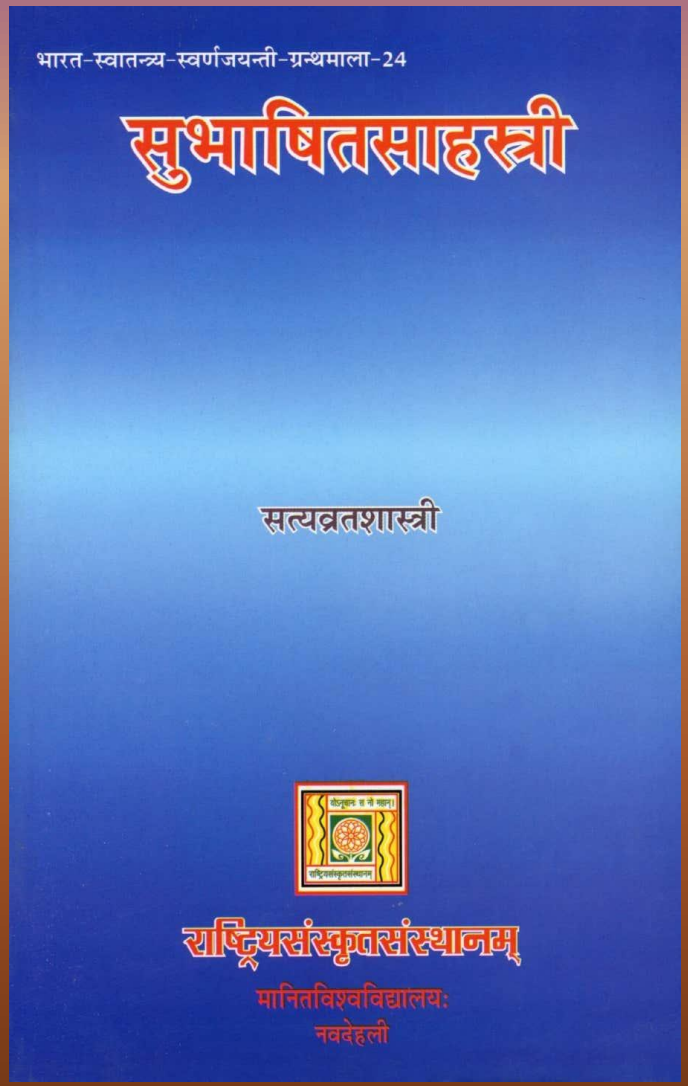

THANK YOU